अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व में पाये जाने वाले औषधीय पौधे, उनकी उपयोगिता एवं संरक्षण: भाग एक

डॉ. रूबी शर्मा*, डॉ. राजेश कुमार मिश्रा एवं डॉ. एन. रॉयचौधुरी

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

*पूर्व महिला वैज्ञानिक 'बी', अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व के अन्तर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

पादपों के औद्योगिक व व्यवसायिक उपयोग के अतिरिक्त जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण भाग ग्रामीण व आदिवासी समुदाय इन्हें अनेकों रुप में उपयोग में लाया करते हैं। ये भोजन, देषी व परंपरागत् दवाओं, चारा, ईधन व अन्य घरेलू आवष्यकताओं में भी इनका उपयोग करते हैं। इन्हें रंगाई, डाई, टेनिन, रेषे, गोंद व रेजिन के लिये भी काम में लाया जाता है। इसके अलावा ये उत्पाद का बड़े पैमाने पर एकत्रीकरण भी आय के स्त्रोत में बढ़ोतरी का जरिया है।

इन अकाष्ठ वनोपज का बड़ा हिस्सा औषधीय पादपों का है जा कि दुनिया भर में लगभग सभी स्थानीय समुदायों द्वारा प्रयोग किये जाते है।भारत में एक अनुमान के अनुसार 7500 से भी अधिक पादप प्रजातियों का उपयोग लगभग 4637 प्राचीन समुदायों द्वारा विभिन्न उद्देष्यों के लिए किया जाता है।

औषधीय पादप उत्पादों का उपयोग बहुत सारी ओद्योगिक इकाईयों द्वारा किया जाता है। जैसे पादप आधारित दवा कंपनी स्वास्थ उत्पादों की कंपनी व पारंपरिक दवाएँ बनाने वाली ईकाईयाँ आदि। इनमें में औषधीय पौधों की मांग काफी अधिक है अतः इसका पादप प्रजातियों के व्यापार पर भी गहरा प्रभाव पड़ेगा। जरुरत इस बात की है कि स्त्रोतों की पहचान कर उनका सही दोहन कर मांग की सही तरीकों से पूर्ति की जाये।

एक अनुमान के अनुसार लगभग 10,000 पादप प्रजातियों का उपयोग दवाओं के रुप में होता है जिसमें अधिकांश का उपयोग पारंपरिक दवाओं के रुप में ही किया जाता है ।

औषधीय पौधे ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ सुरक्षा प्रदान करने के लिए काफी महत्वपूर्ण है । विश्व स्वास्थ संगठन के अनुमान के अनुसार आज भी विभिन्न विकासशील देशों के 80 प्रतिशत लोग अपनी स्वास्थ्य संबंधी जरुरतों के लिए इन्हीं पर निर्भर करते हैं । अतः 4-5 सौ लाख लोगों का स्वास्थ्य आज भी इसी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति पर निर्भर करता है ।

आज इस जैव विविधता पर आश्रित ग्रामीण समुदाय एक बहुत ही गंभीर समस्या से जूझ रहा है । वह है प्राकृतिक आवासों का तेजी से घटता क्षेत्र व औषधीय पादपों का जरुरत से ज्यादा अंधाधुंध उपयोग । यह ग्रामीण लोगों की

आजीविका के लिये खतरा है तथा पादपों के अस्तित्व के लिए भी खतरे की घंटी है।

इसके अलावा संस्कृति ह्रास के कारणों की जानकारी भी बढ़ाने की जरुरत है। भिन्न-भिन्न संस्कृति के प्राचीन आदिवासी समुदायों ने मूलभूत रुप से प्रकृति की इस देन के उपयोगों की अपनी-अपनी पद्धतियाँ विकसित की हैं। इनके आंकड़ा कोष (डाटाबेस) बनाने की जरुरत है जिससे इस बात का अध्ययन का कार्य क्षेत्र (स्कोप) रहे कि क्या चिकित्सा की पारंपरिक पद्धति आपकी आधुनिक चिकित्सा पद्धति के रुप में व्यक्त की जा सकती है।

उपरोक्त कथन का निष्कर्ष यह लगाया जा सकता है कि औषधीय पौधों का उनकी जैव सांस्कृतिक क्षेत्र में संरक्षण करना न केवल जैव विविधता के संरक्षण के लिए अत्यन्त जरुरी है बल्कि यह उस क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण के लिए भी जरुरी है। इसके प्रयास के साथ हमारी सभ्यता व जन स्वास्थ्य पर होने वाले लाभकारी प्रभावों की जानकारी जनसामान्य तक पहुचाने की भी जरुरत है।

औषधीय पौधों की पूर्ति मुख्यतः दो स्त्रोतों द्वारा पूरी होती है। पहला जंगलों से संकलित पादप उत्पाद व दूसरा औषधीय पादपों की कृषि द्वारा प्राप्त उत्पाद। हमारे देश में कम से कम 55 प्रतिशत औषधीय पादप का संकलन गलत व विध्वंशकारी तरीकों से ही किया जाता है।

जैव विविधता ह्रास के कारकों में प्रमुख्र आवास का विनाश (Habitat destruction), वनों का विनाश (Deforestation), अत्यधिक दोहन (Over harvesting), अत्यधिक चराई (Over grazing), जंगलों में आग (Forest fires), झूम खेती (Shifting cultivation) है।

वर्तमान में कई प्रजातियों की मांग की पूर्ति जंगलों से करना असंभव हो गया है। असंतुलित व अवैज्ञानिक विदोहन से बहुत बहुमूल्य प्रजातियाँ अपने प्राकृतिक आवास से विलुप्त हो गयी है तथा इनको सिर्फ औषधीय रोपणियों में ही संरक्षित किया जा सका है। इन परिस्थितियों के रहते औषधीय पौधों के प्राकृतिक आवासों का संरक्षण, पौधों का संरक्षण व विषम परिस्थितियों में इनके प्रवर्धन भागों का संरक्षण इस क्षेत्र के वैज्ञानिकों एवं संस्थानों के उद्देश्य में सर्वोपरि हो गया है।

अचानकमार - अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व में अभी तक कुल 1527 पादप प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है जिनमें लगभग पेड़ पौधों का औषधीय प्रयोग भी अभिलेखित (रिकार्ड) किया गया है। चूँकि यह जीवमंडल कई तरह के जंगल तथा प्राकृतिक आवासों जैसे साल वन, मिश्रित वन, बाँस वन, पहाड़ी क्षेत्र, घाटी क्षेत्र नदी नालों के किनारे, वृक्षारोपण क्षेत्र, चारागाह, आदि पाये जाते है, इसलिए यहाँ पादपों में बहुत विविधता देखी गयी है। इस जैव विविधता का संरक्षण तभी किया जा सकेगा, जब हम इनकी पहचान कर सकेंगे। इसके अलावा यहाँ निवास करने वाले स्थानीय आदिवासी समुदायों में प्राथमिक प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के

उद्देश्य से पहली कड़ी में यहाँ 30 पौधो का प्रचलित नाम, कुल, वैज्ञानिक नाम, उपयोगी भाग व उपयोग दर्शाया गया है।

1. प्रचलित नामः पलाश, ढाक, टेसू

कुलः- फैबेसी

वैज्ञानिक नामः ब्यूटिया मोनोस्पर्मा

उपयोगी भागः पते, छाल, फूल, बीज आदि

उपयोगः यह कफवात रोगों में प्रयुक्त होता है। मूत्रावरोध में फूलों का तथा चर्म व नेत्र रोगों में बीज के लेप का प्रयोग किया जाता है। बिच्छू के काटने पर बीच घिसकर लगाया जाता है। इसके पत्तों का उपयोग दोना-पत्तल बनाने व लाख के कीड़ों के पालन में किया जाता है।

2.प्रचलित नामः अमलतास

कुलः लेग्युमिनोसी

वैज्ञानिक नामः केसिया फिस्टुला

उपयोगी भागः फूल, बीज, फल व छाल

उपयोगः यह एक अच्छी रेचक औषधि है। श्वास व कफ विकारें में इसका प्रयोग किया जाता है। यह नकसीर, पेट के कीड़ें, अंडवृद्धि आदि में लाभदायक है।

3.प्रचलित नामः बहेड़ा

कुलः काम्ब्रेटेसी

वैज्ञानिक नामः टर्मिनेलिया बैलेरिका

उपयोगी भागः फल

उपयोगः यह त्रिफला का एक घटक है। यह उदर शोधक व स्वरेचक होता है। इसके फलों का लेप व बीजों का तेल शोध व बंदनायुक्त विकार में किया जाता है। अतिसार व पेचिस में फल प्रयोग किया जाता है।

4.प्रचलित नामः हर्रा

कुलः कॉम्ब्रेटेसी

वैज्ञानिक नामः टर्मीनेलिया चेब्यूला

उपयोग भागः फल

उपयोगः यह त्रिफला का एक घटक है व यह विषम ज्वर, पेट के सभी विकारें में बल प्रदान करने में व नेत्र रोगों में लाभकारी पाया गया है।

कफ, वमन, हिचकी, बल, रक्तपित्त, मुख के घावों, श्वासरोग चर्मरोग, गर्भाषय, दौर्बल्य आदि में लाभकारी पाया गया है।

5.प्रचलित नामः आंवला

कुलः यूर्फोवियेसी

वैज्ञानिक नामः फाईलेंथस एम्बिलका

उपयोग भागः फल, बीज

उपयोगः रक्त स्त्राव, मधुमेह, प्रमेह, खाज-खुजली, अतिसार में लाभकारी है। पित्त में सूखा आंवला, शक्कर व घी के साथ लाभकारी होता है। रक्तपित, नेत्रों के तिमिर, मूत्रकच्छ, मूर्छा, रक्तप्रदर में शुक्रवृद्धि आदि में विभिन्न अनुपात व तरीकों से लेने से लाभ मिलता है।

6.प्रचलित नामः बेल

कुलः रूटेसी

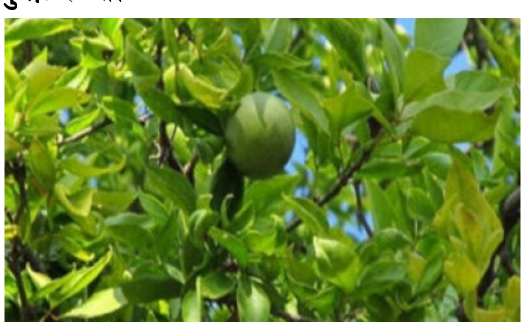

वैज्ञानिक नामः एगल मारमेलॉस

उपयोगी भागः फल का गुदा, बेलगिरी, पत्र, छाल व मूल

उपयोगः यह कफवात रोगों में प्रयुक्त होता है। नेत्र रोगों में पत्तें का रस, डायरिया में पेचिस, रक्तातिसार, बवासीर में लाभकारी है। ताजे पके फल का गूदा बल बृद्धि के लिए भी प्रयोग होता है।

7.प्रचलित नामः नीम

कुलः मीलिएसी

वैज्ञानिक नामः एजाडिरेक्टा इंडिका

उपयोगी भागः सर्वांग

उपयोगः इसकी छाल का प्रयोग जुकाम, रक्तर्शकरा, ज्वर और वेदना, निंद्राजनक, केंसर नाषक व कीटाणुनाशक होती है। इसके पतों का प्रयोग खाज-खुजली, दाद, फफू'दी रोग व पंचांग का प्रयोग रक्तशोधन में किया जाता है। इसका तेल आमवात, कुष्ठरोग में लाभकारी होता है।

8. प्रचलित नामः शीकाकाई

कुलः मोईमोसेसी

वैज्ञानिक नामः अकेसिया कॉनसिना

उपयोगी भागः पत्ती, फल

उपयोगः जीर्ण कफ, श्वासावरोध, वमन, यकृत रोगों में, बालों में रूसी व जूँ से निदान हेतु, बिच्छू के विष का प्रभाव कम करने आदि में इसके फल व पत्तियों का प्रयोग किया जाता है।

9. प्रचलित नामः महुआ

कुलः सैपोटेंसी

वैज्ञानिक नामः मधुका इंडिका

उपयोगी भागः पुष्प, बीज, तेल

उपयोगः यह वातपित्त विकारों के लिए प्रयुक्त किया जाता है । इसके बीजों के तेल को वातव्याधियों, चर्म रोगों पर लगाया जाता है । नाड़ी व्याधी में सूखे फूल व रक्तपित्त में ताजे फूल प्रयोग किये जाते हैं । पुष्पों का क्वाथ शक्कर के साथ प्यास, पेचिस व खांसी दूर करता है।

10. प्रचलित नामः बबूल

कुलः माईमोसेसी

वैज्ञानिक नामः अकेसिया निलोटिका

उपयोग भागः पत्ती, फल, छाल, गोंद आदि

उपयोगः गोंद पौष्टिक होती है, अतिसार व मधुमेह में सूखने में इसका सेवन लाभकारी है । छाल का क्वाथ मुख व दंत रोगों में लाभकारी है । अतिसार में पत्तियों का रस भी लाभकारी होता है किसी भी घाव व रक्त स्राव में पत्री का रस लगाने में लाभ मिलता है।

11. प्रचलित नामः काला सिरिस

कुलः माइमोसेसी

वैज्ञानिक नामः अल्बीजिया लेबेक

उपयोग भागः छाल, पत्ती, फूल व बीज, जड़

उपयोगः बीज का चूर्ण कफ प्रथम रोगों में लाभकारी है। जड़ की छाल मसूडों, कुष्ट रोग के छालों पर प्रयोग किया जाता है। शाखा की छाल पीस कर भी इसी रोग में लाभकारी है। श्वासरोग में पुष्प का स्वरस लाभ देता है । यह विष का नाश करने वाली प्रधान औषधियों में से एक है।

12. प्रचलित नामः मीठी नीम

कुलः रूटेसी

वैज्ञानिक नामः मुराया कोनिंगाई

उपयोग भागः पूरा पौधा, जड़ की छाल

उपयोगः यह बहुउपयोगी पौधा अतिसार प्रवाहिका, अर्श में लाभकारी, त्वचा पर फोड़े-नील, सर्पदंश तक में लाभकारी पाया जाता है।

पत्ती में कृमि, वेदनाहार, वमन शामक गुण पाये जाते है । विषकारी जंतु के काटने पर जड़ की छाल को पीस कर लेप करने पर व पत्ती का रस पीने से फायदा होता है । इसकी पत्ती अच्छी पाचक होती है।

13. प्रचलित नामः बायविडंग

कुलः र्मिसिनेसी

वैज्ञानिक नामः एम्बेलिया जेरियम कॉटम

उपयोग भागः फल, पत्ती

उपयोगः पत्तियों को पीसकर खाज-खुजली पर प्रयोग किया जाता है । यह फीतकृमिनाषक, चर्मरोग, अग्निमाद्य होती है।

14. प्रचलित नामः दुधी व कुटज

कुलः एपोसाईनेसी

वैज्ञानिक नामः राईटिया टिंक्टोरिया

उपयोग भागः मूल, मूल छाल, पत्ती, पुष्प, फल, बीज का तेल आदि।

उपयोगः बीज, रक्त प्रवाहिका, अतिसार, ज्वर, पाचन संस्थान के विकार में लाभकारी होता है।

दंतशूल में इसकी पत्तियों को पीसकर प्रयोग किया जा सकता है । रक्त पित्त, पित्तातिसार शिशुओं के अतिसार को नष्ट करता है।

15. प्रचलित नामः अपामार्ग, चिरचिटा, लटजीरा

कुलः अमैरेन्थेसी

वैज्ञानिक नामः अकाइरैन्थस ऐस्पेरा

उपयोगी भागः पंचांग

उपयोगः यह कफवात रोगों में प्रयोग किया जाता है, जबकि पैतिक विकारों में इसका स्वरस शोथ व दर्दयुक्त स्थानों में इसके बीजों का लेप नेत्र रोगों में इसकी जड़ को शहद में पीस कर बाह्य रूप में प्रयोग किया जाता है। चर्म रोगें में इसकी जड़ का लेप लगाया जाता है । पथरी में इसके पांचाग का रस प्रयोग किया जाता है।

16. प्रचलित नामः अपराजिता

कुलः फैबेसी

वैज्ञानिक नामः क्लाईटोरिया टरनेशिया

उपयोगी भागः मूल व बीज

उपयोगः यह कुष्ठ रोग, मूत्र रोग कर्ण व नेत्र रोगों में प्रयुक्त किया जाता है । इसके बीजों का चूर्ण जलोदर, गर्भपात व जीर्ण कास रोगें में भी प्रयुक्त होता है । यह त्रिदोष जन्य रोगों में सर्व शरीर पर विशेषकर प्लीहा, यकृत व मस्तिष्क पर प्रभावी है ।

17. प्रचलित नामः मण्डूकपर्णी

कुलः अम्बेलीफेरी

वैज्ञानिक नामः सेन्टेला एसियाटिका

उपयोगी भागः पांचांग

उपयोगः यह कफवात व पित का शमन करती है । यह बुद्धिवर्धक व मूत्रक है । चर्म रोगों में उपयोगी व रक्तावाहिनी का संचार नियमित करती है व सामान्य दुर्बलता में भी प्रयोग किया जाता है ।

18. प्रचलित नामः गुड़मार, मधुनाषिनी

कुलः ऐस्किलोपिडियेसी

वैज्ञानिक नामः जिमनेमा सिल्वेस्टर

उपयोगी भागः पत्र व मूल, बीज

उपयोगः इसका विशेष रूप मे मधुमेह व इक्षुमेह आदि रोगों के लिए प्रयुक्त किया जाता है । यह यकृत उत्तेजक के रूप में भी प्रयोग किया जाता है । इसके बीज का चूर्ण श्वास रोग में लाभकारी होता है । मूल का क्वाथ सर्पविष को दूर करने में प्रयोग किये जाते है ।

19. प्रचलित नामः अनंतमूल

कुलः एसक्लिपियडेसी

वैज्ञानिक नामः हेमिडेस्मस इंडिकस

उपयोगी भागः मूल

उपयोगः यह टॉनिक, खून साफ करने, पसीना व मूल बढ़ाने के प्रयोग में लाई जाती है ।

20. प्रचलित नामः गिलोय

कुलः मेनिर्स्पमेसी

वैज्ञानिक नामः टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया

उपयोगी भागः तना

उपयोगः गिलोय का तना त्रिदोष नाषक है । इसके सत्व का उपयोग, खांसी, कफ, श्वासरोग, सिरदर्द, ज्वर, जीर्णज्वर, बालज्वर, प्रसूति, मलेरिया, टायफाइड, नेत्ररोग, जोड़ो का दर्द,

अम्लपित्त, पांडु, क्षयरोग, पीलाया, रक्तविकार, मधुमेह आदि में किया जाता है। क्षयरोग में यह जीवाणु वृद्धि रोकता है । यह डायबिटीज़ में इंसुलिन की उत्तति रोकती है व रक्त में शर्करा कम करती है।

21. प्रचलित नामः वज्रदंती

कुलः अकैन्थेसी

वैज्ञानिक नामः बारलेरिया प्रायनिटिस

उपयोगी भागः पत्तियाँ, बीज, फल

उपयोगः बालों की शोभा तथा केशवृद्धि के लिए उपयोग किया जाता है। सूजन पर इसके लेप से लाभ मिलता है। वज्रदंती के पत्तों के रस से दांतों की मालिश से दर्द दूर होता है । इसके तेल से गंजापन दूर होता है। खाज-खुजली में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

22. प्रचलित नामः माल कांगनी

कुलः सिलेस्ट्रेसी

वैज्ञानिक नामः सिलेस्ट्रस पेनीकुलेटा

उपयोगी भागः पत्तियाँ, बीज, फल

उपयोगः पत्तियों का रस अधीम विषाक्ता में प्रतिकारक के रूप में प्रयोग किया जाता है । इसकी छाल, गर्भस्वाक है । इसके बीज रेचक, वामक तथा बल्य होते हैं। ये आमवात, गठिया, माईग्रेन, पक्षाघात, मनोवसाद में भी उपयोगी है ।

23. प्रचलित नामः जंगली प्याज

कुलः लिलिएसी

वैज्ञानिक नामः अरर्जिनिया इंडिका

उपयोगी भागः बल्ब

उपयोगः इसके बल्ब में एक ग्लूकोसाईड पाया जाता हैं जिसे रेचक, भ्रणवर्द्धक, हदय उत्तेजक संबंधी उपचार में प्रयोग किया जाता है।

24. प्रचलित नामः वच

कुलः एरेसी

वैज्ञानिक नामः अकोरस केलैमस

उपयोगी भागः मूल

उपयोगः कफवात रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है । ब्राहय रूप में इसका लेप संधिवात, आमवात, पक्षाघात में करते हैं । उन्माद, अपस्मार व मानस रोगों में इसका प्रयोग होता है । जुकाम, कण्डषोय व स्वर भेद में इसका एक टुकड़ा मुंह में रख कर चूसने में लाभ मिलता है। सन्निपात ज्वर, बालकों के दाँत निकलते समय

ज्वर, हकलाने व छोटी उम्र के बच्चों की वाकशक्ति बढ़ाने के लिए वच काम आता है।

25. प्रचलित नामः गोखरू

कुलः जाईगोफाईलेसी

वैज्ञानिक नामः ट्रिब्युलस टैरेस्ट्रिस

उपयोगी भागः मूल, बीज

उपयोगः मुख्यतः इसका उपयोग मूत्र रोगों तथा वृक्क के संक्रमण टूट-टूट कर निकल जाती है

26. प्रजलित नामः अडूसा

कुलः अकेन्थेसी

वैज्ञानिक नामः अडाटोडा वसिका

उपयोग भागः संपूर्ण पौधा, पत्ती, फूल, जड़ की छाल।

उपयोगः कफ विकारों में इसकी पत्तियों का प्रयोग किया जाता है। मलेरियाम रक्तपित्त व खासी के रोगों में पत्तियों के स्वरस से लाभ होता है। कृमिरोग, चर्मरोग, वमन, ज्वर, जुकाम आदि में भी पत्रों का रस लाभकारी होता है।

27. प्रचलित नामः हरसिंगार

कुलः निक्टेंथेसी

वैज्ञानिक नामः निक्टेंथस आरबौर ट्सिट्रिस

उपयोग भागः जड़ पत्ती, बीज

उपयोगः इसका उपयोग बवासीर, साइटिका सूखी ख्रॉसी, बात ज्वर रेचक तथा जैसे रोगों में किया जाता है।

28. प्रचलित नामः कडु चिरायता, कालमेघ

कुलः अकेन्थेसी

वैज्ञानिक नामः एन्ड्रोग्राफिस पेनिकुलेटा

उपयोग भागः पांचांग

उपयोगः यह यकृत वृद्धि, विषम ज्वर, चर्म रोग, रक्त शोधन, आमवात उदरशूल, अजीर्णता व कृमि रोग में लाभकारी पाया गया है। मलेरिया व किसी भी प्रकार के ज्वर में पत्ती का रस व काली मिर्च से लाभ मिलता है।

29. प्रचलित नामः चित्रक

कुलः प्लम्बैजिनेसी

वैज्ञानिक नामः प्लम्बैगो जेलिनिका

उपयोग भागः मूल, मूल की छाल तथा पत्र

उपयोगः यह कुपच, ज्वर, कुष्टरोग, अतिसार, हदयोतेजक, यकृत, संरक्षक, कृमिराग में लाभकारी होता है। आमवात, संधिशूल में इसके

मूल में तेल की मालिश लाभकारी होती है । नीली प्रजाति सबसे उत्तम मानी गई हैं मूल का चूर्ण दीर्घायु, बल, चर्मरोग आदि में लाभकारी होता है।

30. प्रचलित नामः चरोटा

कुलः लेग्यूमिनोसी

वैज्ञानिक नामः केशिया टोरा

उपयोग भागः बीज व पत्र

उपयोगः चर्मरोग, कुष्टरोग, अर्श ददु में लाभकारी, श्वासरोग, कास, कृमियों की नाशक, रक्त शुद्धि में इसके बीज प्रयोग किये जाते है । बीज में दाद व छाजन में भी उपयोग होते है । पत्रों का क्वाथ बच्चों के दांत निकलते समय फोड़ो आदि में लाभकारी होता है।

एक अनुमान के अनुसार विश्व की 80 प्रतिशत आबादी अपने स्वास्थ्य के लिए औषधीय पौध और पशुओं पर आश्रित है । ऐसे पौधों की मांग औद्योगीकृत दुनिया में बढ़ती जा रही है जहां लोग अधिक से अधिक प्राकृतिक स्वास्थ्य उपचार का सहारा लेने लगे हैं । वर्तमान अनुमान है कि चीनी 22, 000 करोड़ रुपए मूल्य का पौध आधारित औषधीय उत्पाद का निर्यात करता है और भारत का निर्यात कारोबार केवल 462 करोड़ रुपए का है । विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार औषधीय वनस्पति और वनस्पति उत्पाद का वैश्विक बाजार 2050 तक 5 ट्रिलीयन अमरीकी डालर तक पहुँचने का अनुमान है । यह क्षेत्र में बहुत अधिक क्षमता और मांग को दर्शाता है।

भारत में 10, 000 से भी अधिक औषधीय पौधों की समृद्ध धरोहर है जिनमें से 1800 औषधीय पौधों का उपयोग आयुर्वेद में 4700 पारंपरिक चिकित्सा व्यवसाय में, 1100 सिद्ध औषधीय प्रणाली, 750 यूनानी, 300 होम्योपैथी में, 300 चीनी औषध प्रणाली में और अंतत: 100 एलोपैथी प्रणाली में प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार से पौधों के स्रोतों की तुलना में आंकड़े कम हैं लगभग 3.6 लाख पौध प्रजातियों का पृथ्वी पर फैले होने का अनुमान है, जिनमें से 40 प्रतिशत भारत में उपलब्ध हैं।

औषधीय पौधों का वितरण विविध प्राकृतिक वास स्थानों पर है । भारत में लगभग 70 प्रतिशत औषधीय पौध प्रजातियां, पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट, विन्ध्याचल, छोटानागपुर का पठार, अरावली, हिमालय की तराई में क्षेत्र और उत्तर पूर्व में फैले उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाए जाते हैं।